DHARMA SHIKSHA

(SUMMATIVE ASSESSMENT- I & II)

DESIGNED

AND

DEVELOPED

BY

D.A.V. CENTRE FOR ACADEMIC EXCELLENCE

in a workshop
held at

(D.A.V. College Managing Committee)
Chitragupta Road, Pahar Ganj,
New Delhi-110 055

from 8th to 10th

May, 2014

धर्म-शिक्षा

प्रश्न-पत्र प्रारूप अधिकतम अंक : 90

I. शैक्षणिक महत्त्व एवं उद्देश्य

उद्देश्य	विस्तृत उत्तरीय	दीर्घ उत्तरीय	लघूत्तरीय	अति लघूत्तरीय	बहु-वैकल्पिक	योग
अंक प्रतिशत	33.33	27.77	16.66	11.12	11.12	100%
अंक	30	25	15	10	10	90

II. प्रश्नों का वर्गीकृत महत्त्व

प्रश्नों का प्रकार	विस्तृत उत्तरीय	दीर्घ उत्तरीय	लघूत्तरीय	अति लघूत्तरीय	बहु-वैकल्पिक	योग
प्रश्नों की संख्या	5	5	5	5	10	30
अंक	30	25	15	10	10	90

III. इकाई का महत्त्व

	पाठों के नाम	अंक
1.	ओ३म् ध्वज (अर्थ, भावार्थ, महत्त्व एवं कण्ठस्थीकरण)	5
2.	ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम (ओ३म् का महत्त्व एवं व्याख्या, जप का लाभ)	12
3.	आत्मबोध–(कण्ठस्थीकरण, अर्थ एवं भावार्थ)	5
4.	गीता के निर्धारित दो श्लोक–(उद्देश्य एवं संभावित प्रश्न)	5
5.	गायत्री जप का प्रभाव (गायत्री मन्त्र का अर्थ, महत्त्व, जपविधि एवं लाभ)	11
6.	संस्कृत भाषा (आवश्यकता एवं महत्त्व)	12
7.	राष्ट्रभाषा हिंदी (आवश्यकता, महत्त्व एवं स्थान)	12
8.	पञ्च महायज्ञ (प्रकार, परिभाषा, उद्देश्य एवं लाभ)	12
9.	डी.ए.वी. गान (भावार्थ, कण्ठस्थीकरण एवं संभावित प्रश्न)	4
10.	योग की पहली सीढ़ी : यम (योग का अर्थ, प्रकार, यम का अर्थ, प्रकार उनके अर्थ एवं महत्त्व)	12
		कुल 90

IV. वैकल्पिक नीति

V. विभाजन नीति

VI. काठिन्य स्तर वर्गीकरण

1. कठिन प्रश्न : 15%
2. औसत प्रश्न : 40%
3. सरल प्रश्न : 45%

धर्मशिक्षा

प्रतिलिपि

संकलनात्मक मूल्यांकन (प्रथम)

प्रश्न संख्या	पाठ का नाम प्रश्न का प्रकार	विस्तृत उत्तरीय	दीर्घ उत्तरीय	लघू उत्तरीय	अति लघुत्तरीय	बहु-वैकल्पिक	कुल अंक
1.	ओ३म् ध्वज	–	–	3(1)		1(2)	05
2.	ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम	6(1)	5(1)	–		1(1)	12
3.	आत्म बोध	–	–	3(1)		1(2)	05
4.	गीता के निर्धारित दो श्लोक	–	–	–	2(2)	1(1)	05
5.	गायत्री के जप का प्रभाव	6(1)	5(1)	–			11
6.	संस्कृत भाषा	–	5(2)	–		1(2)	12
7.	राष्ट्रभाषा : हिन्दी	6(1)	5(1)	–		1(1)	12
8.	पञ्च महायज्ञ	6(1)		3(1)	2(1)	1(1)	12
9.	डी.ए.वी. गान				2(2)		04
10.	योग की पहली सीढ़ी : यम	6(1)		3(2)			12
		5	5	5	5	10	90

संक्षेप :

विस्तृत उत्तरीय	=	संख्या : 5	अंक	30
दीर्घ उत्तरीय	=	संख्या : 5	अंक	25
लघूत्तरीय	=	संख्या : 5	अंक	15
अति लघूत्तरीय	=	संख्या : 5	अंक	10
बहु वैकल्कि प्रश्न	=	संख्या : 10	अंक	10
		30		90

धर्म-शिक्षा

(संकलनात्मक मूल्यांकन-1)

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 90**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के पाँच खंड क, ख, ग, घ और ङ हैं।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

3. प्रश्नों के उत्तर देते समय उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों की क्रम संख्या अवश्य लिखें।

4. खण्ड 'ङ' में जो 'अथवा' वाले प्रश्न हैं, उसमें से एक-एक करें।

खंड-क

प्रश्न एक से दस में सही विकल्प छाँटकर लिखें–

1. 'सुमन' का क्या अर्थ है? (1)

(क) सुंदर (ख) तन

(ग) गगन (घ) पुष्प

2. 'इसके नीचे बढ़े अभय मन' में 'इसके' का क्या अर्थ है? (1)

(क) ओम् ध्वज (ख) पृथ्वी

(ग) आकाश (घ) पुष्प

3. जगत का अनुपम आधार कौन है? (1)

(क) संसार (ख) ओ३म्

(ग) समुद्र (घ) कवि

4. आत्म बोध गीत में किसको प्रमाण माना गया है? (1)

(क) गीता (ख) रामायण

(ग) वेद (घ) उपनिषद्

5. है यही ..... नाद निर्विकल्प निर्विवाद। (1)

(क) अनादि (ख) विवादित

(ग) वैकल्पिक (घ) सर्वमान्य

6. 'विहाय' का अर्थ है? (1)

(क) जोड़कर (ख) त्यागकर
(ग) समझकर (घ) देखकर

7. रामायण किसकी रचना है? (1)

(क) वेदव्यास (ख) कालिदास
(ग) पाणिनि (घ) वाल्मीकि

8. गुरु गोविन्द सिंह ने अपने शिष्यों को संस्कृत पढ़ने कहाँ भेजा था? (1)

(क) काशी (ख) हरिद्वार
(ग) पटना (घ) मथुरा

9. हिन्दी की लिपि क्या है? (1)

(क) ब्राह्मी (ख) गुरुमुखी
(ग) देवनागरी (घ) रोमन

10. देवयज्ञ किस कर्म के अंतर्गत आता है? (1)

(क) नित्य कर्म (ख) नैमित्तिक कर्म
(ग) निषिद्ध कर्म (घ) काम्य कर्म

खंड-ख

11. 'मा फलेषु कदाचन' का भावार्थ लिखें। (2)

12. गीता के अनुसार 'नवानि' तथा 'वासांसि' का अर्थ लिखें। (2)

13. 'ब्रह्मयज्ञ' किस प्रकार किया जाता है? (2)

14. 'डी.ए.वी. गान' का गायक कैसे दिनमान का उदय चाहता है? (2)

15. 'डी.ए.वी. गान' के प्रथम पद्य में डी.ए.वी. के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? (2)

खंड-ग

16. निम्न पंक्तियों का भावार्थ लिखें। (3)

वैदिक रवि का हो शुभ उदयन।
आलोकित होवें दिशि सारी।।

17. आत्मबोध गीत में मुक्ति पाने का साधन क्या बताया गया है? (3)

18. पर्यावरण और यज्ञ का क्या संबंध है? (3)

19. ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है? (3)

20. यम कितने हैं? उनके नाम लिखें। (3)

खंड-घ

21. 'ओ३म्' शब्द की व्याख्या करें। (5)

22. परमात्मा को सविता नाम से पुकारने वाले साधक का क्या कर्त्तव्य होना चाहिए? (5)

23. गुरु गोविन्द सिंह जी ने संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए कौन-कौन से कार्य किए? (5)

24. संस्कृत भाषा के अध्ययन के क्या लाभ हैं? (5)

25. राजर्षि टंडन अंग्रेजी के लिए पन्द्रह वर्ष की छूट देने के पक्ष में क्यों नहीं थे? (5)

खण्ड-ङ

26. ओ३म् नाम की महिमा का वर्णन करें। (6)

अथवा

ओ३म् नाम ..... कोय।
जो इसका ..... होय ।।

इस दोहे को पूरा कर भावार्थ लिखें। (6)

27. गायत्री मंत्र का अर्थ लिखें। (6)

अथवा

गायत्री मंत्र लिखें तथा गायत्री मंत्र को और किन-किन नामों से जाना जाता है?

28. हिन्दी के प्रचार व प्रसार में स्वामी दयानन्द ने और आर्य समाज ने क्या योगदान दिया? लिखें। (6)

अथवा

महात्मा गाँधी ने बी.बी.सी. को भारत के आज़ाद होने के बाद अपना संदेश प्रसारित करने के लिए क्यों नहीं दिया?

29. अतिथि यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ की विधियों का उल्लेख करें। (6)

अथवा

देवयज्ञ में अग्नि के कितने रूप हो जाते हैं? वर्णन करें।

30. विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य का क्या महत्त्व है? (6)

अथवा

अस्तेय तथा अपरिग्रह का क्या संबंध है?

धर्म शिक्षा

(संकलनात्मक मूल्यांकन-1)

अंक विभाजन तथा उत्तर संकेत

अधिकतम अंक : 90

निर्देश : कोई ऐसा सही उत्तर जो विद्यार्थी ने लिखा हो, परंतु निम्नलिखित उत्तर संकेत में सम्मिलित न हो तो उसके भी यथासंभव अंक दिए जाएँ।

प्रश्न	उत्तर संकेत	मुख्य बिन्दु	कुल
	खंड-क		
1.	(घ) पुष्प	1	
2.	(क) ओम् ध्वज	1	
3.	(ख) ओ३म्	1	
4.	(ग) वेद	1	
5.	(क) अनादि	1	
6.	(ख) त्यागकर	1	
7.	(घ) वाल्मीकि	1	
8.	(क) काशी	1	
9.	(ग) देवनागरी	1	
10.	(क) नित्य कर्म	1	
	खंड-ख		
11.	'मा फलेषु कदाचन'–मनुष्य का अधिकार केवल कर्मों में है, उनके फलों में नहीं। अतः हमें कर्म करते हुए फल की चिंता नहीं करनी चाहिए।	2	
12.	नवानि–नए वासांसि–वस्त्र	2	
13.	प्रातः सायं ठीक प्रकार स्नान करके आत्मा तथा परमात्मा का चिंतन करना, ईश्वर के ओम् अथवा अन्य किसी नाम का ध्यानमग्न होकर जप करना।	2	
14.	धर्मभक्ति और राष्ट्रभक्ति।	2	
15.	अविरल, निर्मल, सलिल, सदय, ज्ञान-प्रदायिनी व ज्योतिर्मय।	2	

	खंड-ग		
16.	वेदों के ज्ञान से सभी प्रकार के अविद्या रूपी अंधकार का नाश हो जाता है।	3	
17.	इच्छाओं को त्यागकर ईश्वर के ओम् अथवा अन्य किसी भी नामों के नियमित जप से मनुष्य विवेकशील बनता है और उसे संसार के दु:खों से मुक्ति मिलती है।	3	
18.	वेद मंत्रों के उच्चारण, अग्नि और आहुतियों का प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है। यज्ञ से वर्षा-जल की शुद्धि होती है। जल की शुद्धि से अन्न और मन की शुद्धि होती है।	3	
19.	आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा, मन, बुद्धि आदि इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना ही ब्रह्मचर्य कहलाता है।	3	
20.	यम पाँच हैं–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह।	3	
	खंड-घ		
21.	'ओ३म्' शब्द अ,उ,म् इन तीन वर्णों से मिलकर बना है। 'अ' वर्ण सृष्टि के आदि का, 'उ' वर्ण सृष्टि के मध्य का व 'म्' वर्ण सृष्टि के अन्त का प्रतीक है। ओ३म् ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम है। भाव यह है कि ईश्वर ही सृष्टि को उत्पन्न करता है, वही इसका पालन करता है और अंत में वही इसे समेट लेता है।	5	
22.	'सविता' परमात्मा की प्रकाशक शक्ति का नाम है। जिस प्रकार परमात्मा अपनी सविता शक्ति द्वारा सुप्त प्रकृति को प्रेरणा करके सृष्टि को रच देता है, उसी प्रकार परमात्मा को सविता नाम से पुकारने वाले साधक का कर्त्तव्य है कि वह अपने आपको व दूसरों को प्रेरणा देकर अज्ञान को दूर करे व सभी मनुष्यों को ईश्वर-भक्त, वेद भक्त व जनता का सेवक बनाने का प्रयत्न करे।	5	
23.	गुरु गोविन्द सिंह ने संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए प्रत्येक सिख रियासत में संस्कृत की नि:शुल्क पाठशालाएँ चलवाईं। उन्होंने अपने कुछ शिष्यों को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजा। उनके 'दशम-ग्रन्थ' में भी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रयोग हुआ है।	5	

24.	1. संस्कृत जानने वालों को विश्व-भर की विभिन्न भाषाओं को सीखने में, दूसरों की अपेक्षा कम समय लगता है। 2. संस्कृत भाषा हमें अपनी संस्कृति से परिचित कराती है। 3. संस्कृत व्याकरण और अनुवाद के सीखने से बुद्धि तेज होती है, अतः गणित व विज्ञान विषय सरलता से सीख जाते हैं। 4. कंप्यूटर के लिए भी सबसे सरल व उपयुक्त भाषा संस्कृत ही मानी जाती है। 5. अध्यात्म, ज्योतिष, कर्मकांड आदि कई विषय केवल संस्कृत के माध्यम से जाने जाते हैं।	5	
25.	राजर्षि टंडन नेहरू जी की अंग्रेजी भक्ति से पूर्व परिचित थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि यदि एक बार अंग्रेजी के लिए 15 वर्ष की छूट दी गई तो हिन्दी कभी राष्ट्रभाषा नहीं बनेगी। हुआ भी वही जो उनको आशंका थी क्योंकि 15 वर्ष पूरे होने से पहले टंडन जी और बालकृष्ण स्वर्गवासी हो गए। अकेले सेठ गोविन्द दास बचे। इसका लाभ लेते हुए नेहरू जी ऐसा विधेयक पास कराने में सफल हो गए जिससे अंग्रेजी भाषा हमेशा के लिए रह गई।	5	
	खंड-ङ		
26.	1. ओ३म् नाम के जप से वाणी में पवित्रता आती है। 2. मनुष्य की सभी शुभकामनाएँ पूर्ण हो जाती है। 3. मनुष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष स्वामी बन जाता है। 4. ओ३म् नाम के जप से रसना रसीली हो जाती है। 5. ओ३म् का जप करने वाला जीवन संग्राम में कभी निराश नहीं होता। 6. ओ३म् जगत् का अनुपम आधार है।	6	
	अथवा ओ३म् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय। जो इसका सुमिरन करे शुद्ध आत्मा होय।। भावार्थ–ओ३म् नाम ईश्वर के सभी नामों में सर्वश्रेष्ठ है। जो मनुष्य इस नाम का जप करता है उसकी आत्मा पवित्र हो जाती है। उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।		

27.	'ओ३म्' यह परमेश्वर का निज नाम है, 'भूः' जो प्राणों का भी प्राण, 'भुवः' सब दुःखों को छुड़ाने वाला, 'स्वः' स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला है, उस 'सवितुः' सब जगत की उत्पत्ति करने वाले, सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक, समग्र ऐश्वर्य के दाता, 'देवस्य' कामना करने योग्य देव की, 'भर्गः' सब क्लेशों को भस्म करने वाले, पवित्र, शुद्धस्वरूप, 'तत्' उस परमात्मा को हम लोग, 'धीमहि' धारण करें। 'धियो यो नः प्रचोदयात्' जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है। ***अथवा*** ओ३म् भूभुर्वः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। इस मंत्र को सावित्री मंत्र, गुरुमंत्र, महामंत्र, सविता मंत्र आदि नामों से पुकारा जाता है।	6	
28.	स्वामी दयानन्द ने गुजराती होते हुए भी हिन्दी को अपनाया। उन्होंने अपने ग्रन्थ हिन्दी में लिखे। उन्होंने हिन्दी को आर्यभाषा का नाम दिया और सभी देशवासियों को इसे पढ़ने की सलाह दी। इसके पश्चात् आर्यसमाज ने हिन्दी के प्रचार के लिए हिन्दी में समाचार पत्र व पत्रिकाएँ निकाली। दक्षिण भारत, फिजी, मॉरीशस आदि में हिन्दी का प्रचार किया। आर्य विद्वानों द्वारा हिन्दी में कई साहित्यिक पुस्तकें लिखी गई। ***अथवा*** भारत के आजाद होने के समय तक बी.बी.सी. से हिन्दी में प्रसारण नहीं होते थे। गाँधी जी विदेशी भाषा अंग्रेजी को प्रोत्साहन नहीं देना चाहते थे। इसलिए जब बी.बी.सी. के अधिकारी उनसे अंग्रेजी में संदेश लेने पहुँचे तो उन्होंने यह कहकर उन्हें वापिस भेज दिया कि ''दुनिया को भूल जाना चाहिए कि गाँधी अर्थात् (भारत) अंग्रेजी जानता है।	6	
29.	**अतिथि यज्ञ**–बिना सूचना दिए, बिना बुलाए, अपरिचित रूप से घर आने वाले व्यक्ति का स्वागत-सत्कार करना, उसे खाने-पीने को देना अतिथि यज्ञ कहलाता है।		

	बलिवैश्वदेव यज्ञ–इसका अर्थ है समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु प्रयत्न करना, दान देना। स्वयं भोजन करने से पूर्व यज्ञ की अग्नि में अथवा रसोई के चूल्हे में नमकीन वस्तुओं को छोड़कर मीठा मिले हुए अन्न की प्राणियों के लिए आहुति देना। जैसे चींटियों को आटा, चिड़ियों को चुग्गा, पानी आदि देना भी इस यज्ञ में आता है। ***अथवा*** देवयज्ञ में अग्नि के तीन रूप हो जाते हैं– पहला रूप वह राख है जो अग्नि शांत होने के बाद हवन कुंड में रह जाती है। दूसरा रूप इसकी सुगंध व इन वस्तुओं का गुण है जो वायुमंडल में फैल जाती है। तीसरा रूप श्रद्धा व विश्वास की वे भावनाएँ हैं जो यज्ञ करने वाले के अंतर्मन (सूक्ष्म शरीर) में प्रभाव डालती हैं और उसे इस लोक व परलोक में सुख देती है।	6	
30.	यम पाँच हैं– 1. अहिंसा–किसी प्राणी को मन, वचन, कर्म से दुःख न देना। 2. सत्य–सदा सच्चाई के मार्ग पर चलना, प्रिय तथा हितकारक सत्य बोलना। 3. अस्तेय–चोरी न करना, जो अपना नहीं, जो अपने परिश्रम से कमाया नहीं, उसे लेने का प्रयत्न नहीं करना। 4. ब्रह्मचर्य–परमात्मा का ध्यान करना, अपनी इंद्रियों को वश में रखना। शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक शक्ति को बढ़ाना। 5. अपरिग्रह–आवश्यकता से अधिक जमा नहीं करना। ***अथवा*** अस्तेय का अर्थ है–चोरी न करना। जो वस्तु अपनी नहीं है, उसका मूल्य दिए बिना या पूछे बिना उसे न लेना। अपरिग्रह का अर्थ है–अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह न करना। हमारी आवश्यकताएँ जितनी बढ़ेंगी उन्हें पूरा करने के लिए अनुचित उपायों से धन संग्रह करने की प्रवृत्ति भी बढ़ेगी। इससे रिश्वतखोरी, मिलावट व अन्य प्रकार की चोरी को बढ़ावा मिलेगा। यही चोरी 'स्तेय' है। 'अपरिग्रह' का पालन करने से अस्तेय का पालन स्वतः हो जाता है। अस्तेय और अपरिग्रह के पालन से संसार में सुख और शांति फैलेगी व सभी आर्थिक संकट दूर होंगे।	6	

धर्मशिक्षा

प्रश्नानुसार विश्लेषण

प्रश्न क्र.सं.	शैक्षणिक उद्देश्य	विशेष उद्देश्य	पाठ का नाम	प्रश्न का प्रकार	निर्धारित अंक	विभाजन
1.			ओ३म् ध्वज	बहुवैकल्पिक	1	E
2.			ओ३म् ध्वज	बहुवैकल्पिक	1	A
3.			ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम	बहुवैकल्पिक	1	E
4.			आत्म बोध	बहुवैकल्पिक	1	A
5.			आत्म बोध	बहुवैकल्पिक	1	A
6.			गीता के निर्धारित दो श्लोक	बहुवैकल्पिक	1	D
7.			संस्कृत भाषा	बहुवैकल्पिक	1	E
8.			संस्कृत भाषा	बहुवैकल्पिक	1	A
9.			राष्ट्रभाषा : हिन्दी	बहुवैकल्पिक	1	E
10.			पञ्च महायज्ञ	बहुवैकल्पिक	1	E
11.			गीता के निर्धारित दो श्लोक	अति लघूत्तरीय	2	D
12.			गीता के निर्धारित दो श्लोक	अति लघूत्तरीय	2	A
13.			पञ्च महायज्ञ	अति लघूत्तरीय	2	A
14.			डी.ए.वी. गान	अति लघूत्तरीय	2	E
15.			डी.ए.वी. गान	अति लघूत्तरीय	2	E
16.			ओ३म् ध्वज	लघूत्तरीय	3	A
17.			आत्म बोध	लघूत्तरीय	3	E
18.			पञ्च महायज्ञ	लघूत्तरीय	3	A
19.			योग की पहली सीढ़ी : यम	लघूत्तरीय	3	A
20.			योग की पहली सीढ़ी : यम	लघूत्तरीय	3	E
21.			ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम	दीर्घ उत्तरीय	5	E
22.			गायत्री के जप का प्रभाव	दीर्घ उत्तरीय	5	D
23.			संस्कृत भाषा	दीर्घ उत्तरीय	5	E
24.			संस्कृत भाषा	दीर्घ उत्तरीय	5	E
25.			राष्ट्रभाषा : हिन्दी	दीर्घ उत्तरीय	5	E
26.			ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम	विस्तृत उत्तरीय	6	A
27.			गायत्री के जप का प्रभाव	विस्तृत उत्तरीय	6	A
28.			राष्ट्रभाषा : हिन्दी	विस्तृत उत्तरीय	6	E
29.			पञ्च महायज्ञ	विस्तृत उत्तरीय	6	D
30.			योग की पहली सीढ़ी : यम	विस्तृत उत्तरीय	6	A

अति लघूत्तरीय	=	5
लघूत्तरीय	=	5
दीर्घ लघूत्तरीय	=	5
विस्तृत लघूत्तरीय	=	5

*कठिन - D
सामान्य - A
सरल - E

धर्म-शिक्षा

प्रश्न-पत्र प्रारूप

I. शैक्षणिक महत्त्व एवं उद्देश्य

उद्देश्य	विस्तृत उत्तरीय	दीर्घ उत्तरीय	लघूत्तरीय	अति लघूत्तरीय	बहु-वैकल्पिक	योग
अंक प्रतिशत	33.33	27.77	16.66	11.12	11.12	100
अंक	30	25	15	10	10	90

II. प्रश्नों का विभाज्य महत्त्व

प्रश्नों का प्रकार	विस्तृत उत्तरीय	दीर्घ उत्तरीय	लघूत्तरीय	अति लघूत्तरीय	बहु-वैकल्पिक	योग
प्रश्नों की संख्या	5	5	5	5	10	30
अंक	30	25	15	10	10	90

III. इकाई महत्त्व

	पाठों के नाम	अंक
11.	योग की द्वितीय सीढ़ी : नियम (योग का अर्थ प्रकार, नियम के अर्थ, प्रकार, महत्व)	12
12.	वर्ण व्यवस्था का स्वरूप (प्रकार, अर्थ, महत्व एवं आवश्यकता)	12
13.	आश्रम व्यवस्था (प्रकार, अर्थ, महत्व एवं आवश्यकता)	12
14.	'किस दर जाऊँ मैं' (अर्थ एवं भावार्थ)	5
15.	आर्य समाज के नियम (7-10 नियम, व्याख्या, महत्त्व एवं कठस्थीकरण)	12
16.	सत्यार्थ प्रकाश (अर्थ, महत्त्व, रचनाकाल, प्रथम समुल्लास से चौदहवें समुल्लास तक विषयवस्तु)	12
17.	डी.ए.वी. संस्थाएँ (डी.ए.वी. की स्थापना, विषेषताएँ एवं योगदान)	12
18.	डॉ. मेहर चंद महाजन (जन्म, शिक्षा एवं प्रमुख कार्य)	8
19.	राष्ट्रीय गीत (कण्ठस्थ, अर्थ एवं भावार्थ)	5
		कुल 90

IV. वैकल्पिक नीति

V. विभाज्य नीति

VI. कठिन्य स्तर वर्गीकरण

1. कठिन प्रश्न : 15%
2. सामान्य प्रश्न : 45%
3. सरल प्रश्न : 40%

धर्मशिक्षा
प्रतिलिपि
संकलनात्मक मूल्यांकन (द्वितीय)

प्रश्न संख्या प्रश्न का प्रकार	पाठ का नाम	विस्तृत उत्तरीय	दीर्घ उत्तरीय	लघू उत्तरीय	अति लघुत्तरीय	बहु-वैकल्पिक	कुल अंक
11.	योग की दूसरी सीढ़ी : नियम	–	5(2)	–	–	1(2)	12
12.	वर्ण व्यवस्था का स्वरूप	6(1)	5(1)	–	–	1(1)	12
13.	आश्रम व्यवस्था	6(1)	–	3(1)	2(1)	1(1)	12
14.	किस दर जाऊँ मैं	–	–	–	2(2)	1(1)	5
15.	आर्य समाज के नियम (7-10 नियम)	–	5(2)	–	–	1(2)	12
16.	सत्यार्थ प्रकाश	6(1)	–	3(1)	–	1(3)	12
17.	डी.ए.वी. संस्थाएँ	6(1)	–	3(2)	–	–	12
18.	डॉ. मेहर चन्द महाजन	6(1)	–	–	2(1)	–	8
19.	राष्ट्रीय गीत	–	–	3(1)	2(1)	–	5
		5	5	5	5	10	90

सारांश :	विस्तृत उत्तरीय	=	5	अंक	30
	दीर्घ उत्तरीय	=	5	अंक	25
	लघूत्तरीय	=	5	अंक	15
	अति लघूत्तरीय	=	5	अंक	10
	बहु वैकल्कि प्रश्न	=	10	अंक	10
			30		90

धर्म-शिक्षा

(संकलनात्मक मूल्यांकन-II)

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 90**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के पाँच खंड क, ख, ग, घ और ङ हैं।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

3. प्रश्नों के उत्तर देते समय उत्तर पुस्तिका में प्रश्नों की क्रम संख्या अवश्य लिखें।

खंड-क

प्रश्न एक से दस में सही विकल्प छाँटकर एक को लिखें–

1. शौच का अर्थ है– (1)

   (क) नम्रता (ख) पवित्रता

   (ग) कायरता (घ) धूर्तता

2. दु:ख का मूल है– (1)

   (क) सुख (ख) प्यार

   (ग) असंतोष (घ) स्नेह

3. समाज में बाहु किसे माना गया है? (1)

   (क) ब्राह्मण (ख) क्षत्रिय

   (ग) वैश्य (घ) शूद्र

4. किस आश्रम को जीवनरूपी भवन की नींव कहा गया है? (1)

   (क) ब्रह्मचर्य (ख) गृहस्थ

   (ग) वानप्रस्थ (घ) संन्यास

5. ऋषि मुनि किसके गुण गाते हैं? (1)

   (क) राक्षस (ख) मानव

   (ग) ईश्वर (घ) कोई नहीं

6. 'यथायोग्य' व्यवहार किस नियम में बताया गया है? (1)

(क) सातवें (ख) आठवें

(ग) नौवें (घ) दसवें

7. विद्या का सही अर्थ है– (1)

(क) व्यर्थ ज्ञान (ख) यथार्थ ज्ञान

(ग) परम ज्ञान (घ) अज्ञान

8. 'सत्यार्थ प्रकाश' में कितने समुल्लास हैं? (1)

(क) दस (ख) बारह

(ग) आठ (घ) चौदह

9. उल्लास का अर्थ है– (1)

(क) अन्धकार (ख) ज्ञान

(ग) प्रकाश (घ) धर्म

10. कौनसा ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान है? (1)

(क) गीता (ख) पुराण

(ग) रामायण (घ) वेद

खंड-ख

11. विद्यार्थी का जीवन कैसा होना चाहिए? (2)

12. 'प्रीति' एवं 'वर' का अर्थ लिखें। (2)

13. भक्त भगवान से क्यों शर्म महसूस करता है? (2)

14. भारत भूमि को माता क्यों कहा गया है? (2)

15. मेहरचन्द महाजन का जन्म कब और कहाँ हुआ? (2)

खंड-ग

16. आश्रम व्यवस्था क्यों आवश्यक है? (3)

17. विराट, अग्नि एवं मित्र की व्याख्या लिखें। (3)

18. आर्यनेताओं ने शिक्षण संस्थाओं को चलाने के लिए किन तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया? (3)

19. डी.ए.वी. संस्था को बनाने में किन-किन महानुभावों का योगदान रहा कोई तीन नाम लिखें। (3)

20. सुजलां, सुफलां एवं सुखदां शब्दों का अर्थ लिखें। (3)

खंड-घ

21. तप की व्याख्या करें। (5)

22. ईश्वर भक्ति आपके अपने कर्म से कैसे होती है? (5)

23. वर्ण व्यवस्था के आधुनिक स्वरूप कितने हैं? उनके नाम लिखें। (5)

24. आर्य समाज के आठवें नियम की व्याख्या करें। (5)

25. आर्य समाज का दसवाँ नियम सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में कैसे सहायक है? (5)

खण्ड-ङ

26. समाज की गति और स्थिति से क्या अभिप्राय है? इनको बनाए रखने में शूद्र वर्ण किस प्रकार सहयोग देता है? (6)

अथवा

वर्ण और जन्म-जात जाति में क्या अन्तर है?

27. ब्रह्मचर्याश्रम क्यों महत्त्वपूर्ण है? (6)

अथवा

संन्यास आश्रम का क्या महत्त्व है?

28. छठे समुल्लास की विषय-वस्तु लिखें। (6)

अथवा

स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में क्या लिखा?

29. दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज ट्रस्ट एवं मैनेजमेंट सोसायटी की स्थापना किस उद्देश्य से की गई?

अथवा

डी.ए.वी. संस्था की स्थापना के पीछे क्या भावना थी? (6)

30. भारत के राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने जस्टिस मेहरचन्द महाजन के लिए क्या शब्द कहे थे?

अथवा

भारत विभाजन के समय डॉ. महाजन ने डी.ए.वी. की किस प्रकार रक्षा की? (6)

धर्म शिक्षा

(संकलनात्मक मूल्यांकन-II)

अंक विभाजन तथा उत्तर संकेत अधिकतम अंक : 90

निर्देश : यदि कोई ऐसा सही उत्तर जो परीक्षार्थी ने लिखा हो, परंतु उत्तर संकेत में सम्मिलित न हो तो उसके भी यथासंभव अंक दिए जाएँ।

प्रश्न संख्या	उत्तर संकेत	मुख्य बिन्दु हेतु अंक	कुल अंक
	खंड-क		
1.	(ख) पवित्रता	1	1
2.	(ग) असंतोष	1	1
3.	(ख) क्षत्रिय	1	1
4.	(क) ब्रह्मचर्य	1	1
5.	(ग) ईश्वर	1	1
6.	(क) सातवें	1	1
7.	(ख) यथार्थ ज्ञान	1	1
8.	(घ) चौदह	1	1
9.	(ग) प्रकाश	1	1
10.	(घ) वेद	1	1
	खंड-ख		
11.	विद्यार्थी का जीवन बहुत ही सादा, संयमी एवं अनुशासित होना चाहिए।	2	2
12.	प्रेम, आशीर्वाद।	1+1	2
13.	भक्त ने अपने जीवन में लाखों पाप कर्म किये हैं।	2	2
14.	सुन्दर जल, अन्न एवं फल-फूलों से हमारा पालन-पोषण होता है।	2	2

15.	जन्म 23 दिसम्बर 1889 को हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा के गाँव टिक्का नगरोटा में हुआ।	2	2
	खंड-ग		
16.	हमारा समाज मनुष्यों से मिलकर बना है। अगर हम समाज को उन्नत एवं सुव्यवस्थित देखना चाहते हैं तो इसे बनाने वाले मनुष्यों का जीवन भी उन्नत एवं सुव्यवस्थित होना चाहिए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आश्रम व्यवस्था बनाई गई है।	3	3
17.	विराट – जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करता है। अग्नि – जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ और पूजा करने योग्य है। मित्र – जो सबका मित्र है, सबसे स्नेह करता है।	1+1+1	3
18.	1. आत्मनिर्भरता। 2. स्वार्थ त्याग। 3. मितव्ययता।	1+1+1	3
19.	1. महात्मा हंसराज। 2. डॉ. मेहरचन्द। 3. पं. राजाराम।	1+1+1	3
20.	सुजलां – सुन्दर जल वाली। सुफलां – सुन्दर फलों वाली। सुखदां – सुख देने वाली।	1+1+1	3
	खंड-घ		
21.	जीवन में अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए धैर्य और प्रसन्नता से सुख-दुख, भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, इनको सहन करना तप है। व्यक्ति को चाहिए कि वह कर्त्तव्य का पालन करता रहे, सुख आए या दुख, गर्मी हो या सर्दी, मान हो या अपमान, कष्ट-क्लेश हो या आराम, इन सबको प्रसन्नता से सहन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जाए।	5	5

22.	जब हमें किसी बड़े राज्याधिकारी या साधु सन्त महात्मा को श्रद्धा से कोई वस्तु, वस्त्र, फल या मिठाई आदि भेंट करनी हो तो प्रयत्न यही होगा कि उत्तम से उत्तम वस्तु भेंटस्वरूप दी जाये। जब भेंट भगवान को करनी हो तो भी क्या यही प्रयत्न नहीं होगा कि अब कोई गलत कर्म न होने पावे। मन, वचन, कर्म ऐसे हो कि उनके द्वारा जो कुछ भी हो, उसे प्रभु के सामने भेंट करते हुए लज्जा न आए।	5	5
23.	वर्ण व्यवस्था के आधुनिक स्वरूप चार हैं– 1. शिक्षक, 2. रक्षक, 3. पोषक, 4. सेवक।	1+1+1+1+1	5
24.	''अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'' विद्या का अर्थ किसी भी वस्तु का यथार्थ अर्थात् ठीक-ठीक ज्ञान है। यदि हमें किसी बात का सही ज्ञान न हो तो यह अविद्या अर्थात् अज्ञान है। अंधविश्वास या किसी भी बात पर बिना सोचे-समझे विश्वास कर लेना भी अविद्या है।	5	5
25.	सामाजिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए समाज में हर स्थान पर अलग-अलग नियम बने होते हैं। जैसे खिलाड़ी को खेल के मैदान में, विद्यार्थी को विद्यालय में तथा सिपाही को युद्ध के मैदान में कुछ विशेष नियमों का पालन करना अनिवार्य है। अर्थात् जिन कार्यों को करने से दूसरों का अहित नहीं हो वहाँ हम स्वतंत्र हैं परन्तु जिस कार्य से हमारे समाज या राष्ट्र का अहित होने की आशंका है वहाँ हम स्वतंत्र नहीं हैं।	5	5
	खंड-ङ		
26.	समाज गति-कार्यक्षमता, उन्नतशील, स्थिति-व्यवस्था, प्रतिष्ठित व्यवस्था इनको बनाये रखने में शूद्र समाज का सराहनीय योगदान है। शूद्र समाज के पैर हैं। पैर सारे शरीर का बोझ उठाते हैं, उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते हैं। वे गड्ढ़े में भी गिरा सकते हैं और पर्वत के शिखर पर भी ले जा सकते हैं। मस्तिष्क के		

	नियंत्रण में रहने वाले पैर कभी पतन का कारण नहीं बनेंगे। अत: सिर पैरों में झुककर बड़ों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है।	2+4	6
	अथवा		
	मानव समाज में व्यवस्था तो वर्ण अर्थात् काम से होती है। आज के समाज में मनुष्य अपने गुण, कर्म, स्वभाव अर्थात् मेरिट और शिक्षा और काम से ही बड़ा-छोटा होता है। जन्म-जात जाति तो मनुष्य है। किन्तु फिर भी भारत माता की और धरती माता की संतान के रूप में तो हम सभी बराबर हैं।	4+2	6
27.	जन्म से पच्चीस वर्ष तक की आयु को ब्रह्मचर्य की अवस्था माना जाता है। यह आश्रम अर्थात् जीवन का यह समय ज्ञान-प्राप्ति और जीवन की तैयारी के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम जीवन रूपी भवन की नींव के समान है। इस काल में विद्यार्थी जो भी सीखता है वह जीवन भर उसके काम आता है। ऋषि-मुनियों के अनुसार विद्यार्थी का जीवन बहुत ही सादा, संयमी एवं अनुशासित होना चाहिए।	6	6
	अथवा		
	भगवा वस्त्र धारण करने से ही कोई संन्यासी नहीं बन जाता। संन्यासी केवल उसे ही मानना चाहिए जो पूर्ण विद्वान, धार्मिक, परोपकारी और विरक्त हो। इस आश्रम की सहायता के बिना विद्या और धर्म की वृद्धि कभी नहीं हो सकती। सत्य का उपदेश करना तथा वेदादि सत्य-शास्त्रों का विचार और प्रचार करना ही एक संन्यासी का परम कर्तव्य है।	6	6
28.	छठे समुल्लास में स्वामी जी ने राजा तथा प्रजा के धर्म के विषय में बताया है। स्वामी जी के अनुसार सब विद्वानों को मिलकर राजा का चुनाव करना चाहिए। राजा के अयोग्य सिद्ध होने पर प्रजा के पास उसे हटाने का अधिकार होना चाहिए। राजा कभी स्वतंत्र नहीं होना चाहिए। राजकाज में राजा की सहायता के लिए विद्वानों की विभिन्न सभाएँ होनी चाहिए। राजा को सभा के अधीन और सभा को राजा के अधीन होना चाहिए और राजा और सभा को प्रजा के अधीन होना चाहिए।	6	6

	अथवा		
	सत्यार्थ प्रकाश के अंत में स्वामी जी ने 'स्वमन्त-व्यामन्तव्य प्रकाश:' नामक परिशिष्ट रखा है, जो इन चौदह समुल्लासों को पक्षपातरहित होकर न्यायदृष्टि से देखेगा उसकी आत्मा में सत्य अर्थ का प्रकाश होकर आनन्द होगा और जो हठ, दुराग्रह और ईर्ष्या से देखे-सुनेगा उसके लिए इस ग्रन्थ का अभिप्राय सही अर्थों में समझ पाना अत्यंत कठिन होगा। स्वामी जी लिखते हैं कि सत्य को मानना-मनवाना और असत्य को छोड़ना-छुड़वाना ही मेरा मुख्य प्रयोजन है।	6	6
29.	''हम एक ऐसी संस्था स्थापित करना चाह रहे हैं जिसमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अवगुणों को त्याग कर केवल गुणों को ही ग्रहण किया जायेगा। संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा द्वारा शिक्षित और अशिक्षित वर्ग को और समीप लाया जाएगा।	6	6
	अथवा		
	स्वामी जी के देहान्त के बाद उनके आदर्शों को बनाए रखने के लिए एक विचार रखा गया, ''स्वामी जी ने जीवन-भर स्वदेश मानव जाति और वैदिक धर्म की सेवा की है इसलिए हम उनके ऋणी हैं। इस ऋण को चुकाने के लिए उनके नाम से एक स्मारक स्थापित किया जाए।''		
30.	''अनेक महत्वपूर्ण कमीशनों के सदस्य के रूप में, अनेक शिक्षण संस्थाओं के संचालक, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश तथा उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में जस्टिस महाजन ने अपना उत्तरदायित्व शानदार ढंग से निष्ठापूर्वक निभाया। वे उच्चकोटि के न्यायविद् और भारत-माता के सच्चे समर्पित पुत्र थे।	6	6
	अथवा		
	भारत विभाजन से डी.ए.वी. को भी बहुत बड़ी क्षति पहुँची। जनता के दान से बनाई गई शिक्षण संस्थाएँ पाकिस्तान में रह गईं। असंख्य कर्मचारी बेघर हो गए थे। असंख्य छात्र-छात्राओं का भविष्य अंधकारमय हो गया था। डॉ. महाजन ने अपनी दूरदृष्टि का परिचय देते हुए डी.ए.वी. का कार्यालय जालन्धर से दिल्ली लाने की प्रेरणा तत्कालीन नेताओं को दी।	6	6

धर्मशिक्षा

प्रश्नानुसार विश्लेषण

प्रश्न क्र.सं.	शैक्षणिक उद्देश्य	विशेष उद्देश्य	पाठ का नाम	प्रश्न का प्रकार	निर्धारित अंक	विभाजन
1.			योग की द्वितीय सीढ़ी : नियम	बहु वैकल्पिक	1	सरल
2.			योग की द्वितीय सीढ़ी : नियम	बहु वैकल्पिक	1	सरल
3.			वर्ण व्यवस्था का स्वरूप	बहु वैकल्पिक	1	सरल
4.			आश्रम व्यवस्था	बहु वैकल्पिक	1	सरल
5.			किस दर जाऊँ मैं	बहु वैकल्पिक	1	सरल
6.			आर्य समाज के नियम	बहु वैकल्पिक	1	सरल
7.			आर्य समाज के नियम	बहु वैकल्पिक	1	सरल
8.			सत्यार्थ प्रकाश	बहु वैकल्पिक	1	सरल
9.			सत्यार्थ प्रकाश	बहु वैकल्पिक	1	सरल
10.			सत्यार्थ प्रकाश	बहु वैकल्पिक	1	सरल
11.			आश्रम व्यवस्था	अति लघूत्तरीय	2	सरल
12.			किस दर जाऊँ मैं	अति लघूत्तरीय	2	सामान्य
13.			किस दर जाऊँ मैं	अति लघूत्तरीय	2	सरल
14.			राष्ट्रीय गीत	अति लघूत्तरीय	2	सामान्य
15.			डॉ. मेहर चंद महाजन	अति लघूत्तरीय	2	सरल
16.			आश्रम व्यवस्था	लघूत्तरीय	3	सरल
17.			सत्यार्थ प्रकाश	लघूत्तरीय	3	सामान्य
18.			डी.ए.वी. संस्थाएँ	लघूत्तरीय	3	सरल
19.			डी.ए.वी. संस्थाएँ	लघूत्तरीय	3	सरल
20.			राष्ट्रीय गीत	लघूत्तरीय	3	कठिन
21.			योग की दूसरी सीढ़ी : नियम	दीर्घ उत्तरीय	5	सरल
22.			योग की दूसरी सीढ़ी : नियम	दीर्घ उत्तरीय	5	कठिन

प्रश्न क्र.सं.	शैक्षणिक उद्देश्य	विशेष उद्देश्य	पाठ का नाम	प्रश्न का प्रकार	निर्धारित अंक	विभाजन
23.			वर्ण व्यवस्था का स्वरूप	दीर्घ उत्तरीय	5	सरल
24.			आर्य समाज के नियम	दीर्घ उत्तरीय	5	सरल
25.			आर्य समाज के नियम	दीर्घ उत्तरीय	5	सामान्य
26.			वर्ण व्यवस्था का स्वरूप	अति दीर्घ उत्तरीय	6	सामान्य
27.			आश्रम व्यवस्था	अति दीर्घ उत्तरीय	6	सरल
28.			सत्यार्थ प्रकाश	अति दीर्घ उत्तरीय	6	सामान्य
29.			डी.ए.वी. संस्थाएँ	अति दीर्घ उत्तरीय	6	कठिन
30.			डॉ. मेहर चंद महाजन	अति दीर्घ उत्तरीय	6	सामान्य

अति लघूत्तरीय

लघूत्तरीय

दीर्घ लघूत्तरीय

विस्तृत लघूत्तरीय

*कठिन - 14

सामान्य - 36

सरल - 40

90